ग्रहगोचर ज्योतिष

ग्रहगोचर ज्योतिष

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई.

श्रीः ।

ग्रहगोचर ज्योतिष ।

काशीसमीपवर्त्ती तेलारीग्रामनिवासी त्रिपाठ्युप-
नामक पं० रघुनन्दनज्योतिर्विदात्मज पं०शाल-
ग्राम ज्योतिषी द्वारा संगृहीत तथा तत्कृत-

भाषांटीकासमेत ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,™

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

॥ श्रीः ॥

अथ ग्रहगोचर ज्योतिष ।

भाषाटीकासमेत ।

सूर्यका फल ।

सूर्य्यः स्थानविनाशं भयं श्रियं मानहानिमथ दैन्यम् ॥ विजयं मार्गं पीडां सुकृतं हन्ति सिद्धिमायुरथ हानिम् ॥ १ ॥

शालग्रामो मुहुर्नत्वा पितरं रघुनन्दनम् ।
भाषाऽनुवादसहितं कुरुते ग्रहगोचरम् ॥

अर्थ- सूर्य-गोचरमें जन्मराशिके हों तो स्थानका नाश करते हैं, दूसरे भय, तीसरे धनलाभ, चौथे मानहानि,

पांचवें दैन्य, छठे जय, सातवें मार्ग, आठवें पीडा, नववें पुण्यनाश, दशवें सिद्धि, एकादशवें लाभ और बारहवें हानि करते हैं ॥ १ ॥

चन्द्रमाका फल ।

चन्द्रोऽन्नं च धनं सौख्यं रोगं कार्यक्षतिं श्रियम् ।
स्त्रियं मृत्युं नृपभयं सुखमायं व्ययं क्रमात् ॥२॥

अर्थ–चन्द्रमा-१ अन्नप्राप्ति, २ धनप्राप्ति, ३ सुख, ४ रोग, ५ कार्यक्षय, ६ लक्ष्मीप्राप्ति, ७ स्त्रीप्राप्ति, ८ मरण, ९ राजासे भय, १० सुखप्राप्ति, ११ लाभ, १२ खर्च क्रमसे यह फल करता है ॥ २ ॥

मंगलका फल ।

भौमोऽरिभीतिं धननाशमर्थं भयं तथाऽर्थ-
क्षतिमर्थलाभम् ॥ धनात्ययं शत्रुभयं च
पीडां शोकं धनं हानिमनुक्रमेण ॥ ३ ॥

अर्थ—मङ्गल १ शत्रुसे भय, २ धनका नाश, ३ धन-प्राप्ति, ४ भयप्राप्ति, ५ धनका नाश, ६ धनप्राप्ति, ७ धन-नाश, ८ शत्रुभय, ९ पीडा, १० चिन्ताकारक, ११ धन प्राप्ति, १२ हानि, क्रमसे यह फल करता है ॥ ३ ॥

बुधका फल ।

बुधस्तु बन्धं धनमन्यभीतिं धनं रुजं स्थान-मथो च पीडाम् ॥ अर्थं रुजं सौख्यमथा-त्मसौख्यमर्थक्षतिं जन्मगृहात्करोति ॥ ४ ॥

अर्थ—बुध जन्मस्थानमें बन्धन, २ धनप्राप्ति, ३ शत्रुका भय, ४ धनप्राप्ति, ५ रोग, ६ स्थानप्राप्ति, ७ पीडाकारक, ८ अर्थप्राप्ति, ९ रोग, १० सुख, ११ पुत्रसुख, १२ धननाश यह फल करता है ॥ ४ ॥

बृहस्पतिका फल ।

गुरुर्भयं धनं क्लेशं धननाशं सुखं शुचम् ॥
मानं रोगं सुखं दैन्यं लाभं पीडां च जन्मभात्५॥

अर्थ–बृहस्पति–१ भय, २ धनप्राप्ति, ३ क्लेशकारक, ४ धननाश, ५ सुखप्राप्ति, ६ शोक, ७ मानप्राप्ति, ८ रोग, ९ सुखप्राप्ति, १० दैन्य, ११ लाभकारक, १२ पीडा, जन्मराशिसे क्रमसे यह फल करते हैं ॥५॥

शुक्रका फल ।

कविः शत्रुनाशं धनं सौख्यमर्थं सुताप्तिं रिपोः साध्वसं शोकमर्थम् ॥ बृहद्वस्त्रलाभं विपत्तिं धनाप्तिं धनाप्तिं तनोत्यात्मनो जन्मराशेः ॥६॥

अर्थ–शुक्र–अपनी जन्मराशिसे १ शत्रुनाश, २ धनप्राप्ति, ३ सुखप्राप्ति, ४ धनप्राप्ति, ५ पुत्रप्राप्ति, ६ शत्रुभय, ७ शोक, ८ धनप्राप्ति, ९ वस्त्रलाभ, १० विपत्ति, ११ धनप्राप्ति, १२ धनप्राप्ति यह फल करता है ॥ ६ ॥

शनिका फल ।

शनिः सर्वनाशं तथा वित्तनाशं धनं शत्रुवृद्धिं

सुताद्दुःखवृद्धिम् ॥ श्रियं दोषसङ्गं रिपुं द्रव्य-
नाशं तथा दौर्मनस्यं धनं बह्वनर्थम् ॥ ७ ॥

अर्थ—शनि—जन्मराशिमें हो तो—सर्वनाश, २ वित्त-
नाश, ३ धनलाभ, ४ शत्रुकी वृद्धि, ५ पुत्रसे दुःखकी
वृद्धि, ६ लक्ष्मीप्राप्ति, ७ बहुत दोष, ८ शत्रु, ९ द्रव्यनाश,
१० मानसिक दुःख, ११ धनप्राप्ति, १२ बहुत अनर्थका
करनेवाला होता है, क्रमसे यह फल जानना ॥ ७ ॥

राहुका फल ।

राहुर्हानिं तथा नैःस्वं धनं वैरं शुचं श्रियम् ॥
कलिं मृतिं च दुरितं वैरं सौख्यं शुचं क्रमात्॥८॥

अर्थ—राहु—१ स्थानमें हो तो—हानि करै, २ निर्धन,
३ धनप्राप्ति, ४ शत्रुता, ५ शोककारक, ६ लक्ष्मी-
कारक, ७ कलहकारक, ८ मृत्युकारक, ९ दुःख,
१० वैर, ११ सुखप्रद, १२ शोकप्रद, क्रमसे यह
फल करता है ॥ ८ ॥

केतुका फल ।

केतुः क्रमाद्रुजं वैरं सुखं भीतिं शुचं धनम्॥
गतिं गदं दुष्कृतं च शोकं कीर्तिं च शत्रुताम् ९॥

अर्थ—केतु क्रमसे १ रोग, २ वैरकारक, ३ सुखप्राप्ति, ४ भयकारक ५ शोकप्राप्ति, ६ धनलाभ, ७ गमनकारक, ८ रोगप्राप्ति, ९ दुष्टकर्म, १० शोकप्रद ११ यशका लाभ, १२ शत्रुओंकी उत्पत्ति यह फल करता है ॥ ९ ॥

यह जन्मराशिसे द्वादशभावस्थ ग्रहोंका फल कहा है यह फल जन्मराशिसे देखा जाताहै । विशेष सुगमताके लिये इसका चक्रभी आगे लिख दिया है—

नाम	सूर्य	चंद्र	भौम	बुध	गुरु	भृगु	शनि	राहु	केतु
तनु	नाश	अन्न प्राप्ति	शत्रु भय	बंधन	भय	शत्रु नाश	सर्व नाश	हानि	रोग
धन	भय	धन प्राप्ति	धन नाश	धन प्राप्ति	धन प्राप्ति	धन लाभ	धन नाश	निर्धन	वैर
सहज	धन लाभ	सुख	धन प्राप्ति	भय	क्लेश.	सुख	धन लाभ	धन प्राप्ति	सुख
मित्र	मान हानि	रोग	भय	धन प्राप्ति	धन नाश	धन लाभ	शत्रु	शत्रु ताप	भय
पुत्र	दुःख	कार्य क्षय	धन क्षय	रोग	सुख	पुत्र प्राप्ति	पुत्रसे दुःख	शोक	शोक
शत्रु	जय	लक्ष्मी प्राप्ति	धन प्राप्ति	स्थान प्राप्ति	शोक	शत्रु भय	लक्ष्मी प्राप्ती	लक्ष्मी प्राप्ति	धन लाभ
जाया	मार्ग	स्त्री प्राप्ति	धन नाश	पीडा	मान	यात्रा	दोष	कलह	यात्रा
मृत्यु	पीडा	मरण	शत्रु भय	धन प्राप्ति	रोग	धन प्राप्ति	शत्रु भय	मृत्यु	रोग
धर्म	पुण्य नाश	राज भय	पीडा	रोग	सुख	वस्त्र लाभ	द्रव्य नाश	दुःख	दुष्ट कर्म
कर्म	सिद्धि	सुख प्राप्ति	चिंता	सुख	दुःख	विपत्ति	मानसी दुःख	वैर	शोक
आय	लाभ	लाभ	धन प्राप्ति	पुत्र सुख	लाभ	धन लाभ	धन लाभ	सुख	यश
व्यय	हानि	खर्च	हानि	धन नाश	पीडा	धन लाभ	बहुत अनर्थ	शोक	शत्रु

अष्टम और चतुर्थ स्थान तथा साढेसाती शनिका फल ।

सौख्यं नाशयते सदा रविसुतो राशौ चतुर्थाष्टमे व्याधिं बन्धुविरोधदूरगमनं क्लेशश्च चिन्ता परा ॥ राशौ द्वादशके शिरस्यथ जनुष्यन्तार्द्धं-तीये पदोर्नानाक्लेशभयप्रदो रविजनिः पुत्रान् पशून्पीडयेत् ॥ १० ॥

अर्थ–चौथा, आठवां शनि सुखका नाश करताहै और व्याधि, बन्धुविरोध, दूरदेश गमन, क्लेश और बडीभारी चिन्ता करताहै, बारहवाँ शनि शिरमें, जन्मका हृदयमें, द्वितीयशनि पैरमें रहताहै, तब नाना प्रकारका क्लेश और भय देताहै तथा पुत्र और पशुवोंको पीडा देताहै ॥ १० ॥

ग्रहोंके फलका समय ।

राश्यादिगौ रविकुजौ फलदौ सितेज्यौ मध्ये सदा शशिसुतश्चरमेऽजमन्दौ ॥ अध्वान्नवह्निभयसन्मति वस्त्रसौख्यदुःखानि मासि जनिभे रविवासरादौ ११ ॥

अर्थ–सूर्य और मंगल राशिके प्रवेशसमयमें, तथा शुक्र और बृहस्पति राशिके मध्यमें और बुध सर्वदा, तथा चन्द्रमा और शनैश्चर राशिके अन्तमें फल देते हैं; जिस मासमें जन्मनक्षत्र रविवारको हो उसमासमें यात्रा कराताहै और सोमवारको हो तो अन्नप्राप्ति, मंगलवारको हो तो अग्निभय, बुधवारको भय, बृहत्पतिवारको हो तो श्रेष्ठमति, शुक्रवारको हो तो सुख और शनिवारको हो तो दुःखकारक फल होताहै ॥ ११ ॥

सूर्यादिग्रहोंकी राशिप्रवेशसे पूर्वही फलकरनेकी दिनसंख्या.

सूर्यारसौम्यास्फुजितोक्षनागसप्ताद्रिघस्रान् विधुरग्निनाडीः ॥ तमोयमेज्यास्त्रिरसाश्विमासान् गन्तव्यराशेः फलदाः पुरस्तात् ॥ १२ ॥

अर्थ–सूर्य जिस राशिपर है उस राशिसे अगाडीके राशिका फल अपने जानेसे ५ दिन पहिलेसेही करता है; एवं मंगल ८ दिन, और बुध ७ दिन, तथा शुक्र ७ दिन और

चन्द्रमा ३ घडी, राहु ३ मास, शनि ६ मास, बृहस्पति २मास प्रथमसे जानेवाली राशिका फल करताहै ॥ १२ ॥

ग्रहोंकी स्थितिसंख्या ।

मासं शुक्रबुधादित्याः सार्द्धमासं तु मंगलः ॥
त्रयोदश गुरुश्चैव सपादद्विदिने शशी ॥ १३॥

अर्थ—शुक्र, बुध, सूर्य ये तीनों ग्रह एक राशिपर एक महीना रहतेहैं और मंगल एक राशिपर डेढ महीना रहताहै, एवं बृहस्पति तेरह महीना रहताहै और चन्द्रमा एक राशिपर सवा दो दिन रहताहै ॥ १३ ॥

राहुरष्टादशान्मासांस्त्रिंशन्मासाञ्शनैश्चरः ॥
यथा राहुस्तथा केतू राशिभोगाः प्रकीर्तिताः १४

अर्थ—एवं राहु एक राशिपर अठारह महीने रहताहै और शनैश्वर तीस महीने एक राशिको भोगता है और केतुभी राहुके समान एक राशिको १८ मासमें भोगताहै ॥ १४ ॥

भुक्तिचक्र ।

र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह
०	०	०	०	१	०	२	१	१	वर्ष
१	०	१	१	१	१	६	६	६	मास
०	२।	१५	०	०	०	०	०	०	दिन

पादविचार ।

रुद्रे रसे जन्मनि रुक्मपादं द्विपञ्चनन्देषु शुभं च रौप्यम् ॥ त्रिसप्तदिक्षु प्रवदन्ति ताम्रं व्ययाष्टतुर्येष्वतिकष्टलोहम् ॥ १५ ॥

अर्थ–यह पादविचार है इसके देखनेका प्रकार यह है कि जिस समय ग्रह एकराशिको छोडकर दूसरे राशि-पर जातेहैं उस समय चन्द्रमाको देखना कि, जन्मसे किस स्थानपर है अगर चन्द्रमा ११ । ६ या १ का हो तो सोनेके पैरसे आया जानना फल अशुभ है । और चन्द्रमा २ । ५।९।पर हो तो चाँदीके पैरसे आया

जानना फल शुभहै, यदि चन्द्रमा ३ ।७।१० पर हो तो तांबेके पैरसे आया जानना फल शुभ है । और चन्द्रमा १२ ।८।४ पर हो तो लोहके पैरसे आया जानना फल अशुभहै । इसका विचार बालकके जन्मसमयमेंभी होता है यह चरणविचार मारवाड प्रान्तमें विशेष होताहै ॥ १५॥

अथ दिनदशाविचार ।

विंशतिर्जन्मानि सूर्ये तृतीये दश चन्द्रमाः ॥
अष्टौ चतुर्थे भौमस्य ज्ञस्यारौ चतुरंशकम् ॥ १६॥
सप्तमे दश सौरेः स्यान्नवमेऽष्टौ च वाक्पतेः ॥
दशमे विंशती राहोस्तदूर्ध्वे तु भृगोर्दशा ॥ १७ ॥

अर्थ–सूर्य–जन्मराशिके जिस दिन आवै उस दिनसे २० दिनतक सूर्यकी दशा रहतीहै, और उसके उपरान्त तीसरे सूर्यके १० दिनतक चन्द्रमाकी दशा रहतीहै,उसके उपरान्त चतुर्थ सूर्यके ८ दिनतक मंगलकी दशा होतीहै, फिर इसी तरहसे छठे सूर्यके ४ दिनतक

बुधकी तथा सप्तम सूर्यके १० दिनतक शनैश्चरकी, एवं नवम सूर्यके ८ दिनतक गुरुकी दशा होतीहै उसके उपरान्त दशम सूर्यके २० दिनतक राहुकी दशा होतीहै और उसके उपरान्त बारहवें सूर्यके अन्ततक शुक्रकी दशा होती है। यह दिनदशा है एक वर्षमें यह दशा भोग जाती है परन्तु इसमें सूर्यसहित आठही ग्रहोंकी दशा हैं केतुकी दशा नहीं होती इसको स्पष्ट रीतिसे नीचे उदाहरणमें देखो ॥ १६ ॥ १७ ॥

उदाहरण।

जैसे किसी मनुष्यका मेषराशिका जन्म है तो मेष राशिके सूर्यमें प्रथम सूर्यकी दशा २० बीस दिनकी फिर चन्द्रमाकी ५० दिनकी फिर मंगलकी २८ दिनकी इसी तरहसे अन्य ग्रहोंकी भी जानना, विशेष स्पष्टताके लिये नीचे चक्रभी लिख दियाहै ॥

दिनदशा चक्र ।

सू.	चं.	मं.	बु.	श.	बृ.	रा.	शु.	ग्र.
०	१	०	१	१	१	१	२	मा.
२०	२०	२८	२६	६	२८	१२	१०	दि.

दशा फल

सूर्यो वित्तविनाशनं प्रकुरुते धर्मार्थलाभं शशी भौमः शस्त्रविघातरोगमरणं सोमात्मजः सम्पदम् ॥ मन्दो मन्दगतिर्गुरुश्च विभवं राहुस्तथा बन्धनं सर्वाभीष्टफलप्रदो निगदितः शुक्रो दशासंस्थितः ॥ १८ ॥

अर्थ—सूर्यकी दशामें धनका नाश और चन्द्रमाकी दशामें धर्म तथा धनका लाभ, मंगलकी दशामें शस्त्रका घाव, रोग, मृत्यु, तथा बुधकी दशामें धनकी प्राप्ति, एवं शनिकी दशामें मन्दगति, तथा गुरुकी दशामें सम्पत्ति लाभ, राहुकी दशामें बन्धन, एवं भृगुकी दशामें सर्व अभीष्ट फलकी प्राप्ति होतीहै । ऐसा फल अपनी २ दशामें सब ग्रह करतेहैं ॥ १८ ॥ इति ॥

सूर्यका दान ।

माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुः कौसुंभवस्त्रं गुड-
हेमताम्रम् ॥ आरक्तकं चंदनपंकजं च
वदन्ति दानं हि प्रदीप्तधाम्ने ॥ १९ ॥

१ माणिक ।
२ गेहूं ।
३ सवत्सा गौ ।
४ कषाय वस्त्र ।
५ गुड ।
६ सुवर्ण ।
७ तांबा ।
८ लाल चंदन ।
९ लाल फूल ।

रवि ॥ १ ॥

मध्यवर्तुलमंडल अं.१२कालिंगदेशोद्भव का-
श्यपगोत्ररक्तवस्त्रसिंहकास्वामीज. ७०००.

अर्थ—सूर्योत्थ अरिष्टमें माणिक्य, गेहूं, बछडे सहित गौ, कसूमी वस्त्र, गुड, सुवर्ण, तांबा, लालचन्दन, लाल फूल यह दान कहा गया है ॥ १९ ॥

चन्द्रमाका दान ।

सद्वंशपात्रास्थिततंदुलांश्च कर्पूरमुक्ताफल-
शुभ्रवस्त्रम् ॥ गावोपयुक्तं[1] वृषभं च रौप्यं
चन्द्राय दद्यात् घृतपूर्णकुम्भम् ॥ २० ॥

	चन्द्रमा ॥ २ ॥
१ वंशपात्र । २ चावल । ३ कपूर । ४ मोती । ५ श्वेत वस्त्र । ६ गो या वृषभ । ७ चांदी । ८ कांस्यपात्रमें घृत।	चंद्र आग्नेय्यांचतुरस्रमंडल अं. ४ यमुनातीर-देशआत्रेयसगोत्र. श्वेतवर्ण कर्ककास्वामी. जप. ११०००

अर्थ–चन्द्रमाके अर्थ सुन्दर वाँशके पात्रमें चावल कर्पूर मोती, श्वेतवस्त्र रख गौ या बैल, चाँदी और वृतसे युक्त कांसीका कलश यह दान कहाहै ॥ २० ॥

---

१ युगोपयुक्तम् इति पा०

मंगलका दान ।

प्रवालगोधूममसूरिकाश्चारुणं वृषं चापि गुडं सुवर्णम् ॥ आरक्तवस्त्रं करवीरपुष्पं ताम्रं हि भौमाय वदंति दानम् ॥ २१ ॥

	मंगल ॥ ३ ॥
१ मूंगा ।	
२ गेहूं ।	
३ मसूर ।	
४ लाल वृषभ ।	
५ गुड ।	
६ सुवर्ण ।	
७ लाल वस्त्र ।	द. त्रिकोणमंडल अं. ३ अवंतीदेशोद्भव
८ कन्हेरके फूल ।	भारद्वाजगोत्र रक्त वर्ण वृश्चिकमेषकास्वामी.
९ ताम्र ।	ज. ११०००

अर्थ—भौमके तुष्टयर्थं मूंगा, गेहूं, मसूर, लाल बैल गुड, सुवर्ण और लाल वस्त्र, कन्हेरके फूल और ताम्र यह दान करना चाहिये ॥ २१ ॥

बुधका दान ।

चैलं[1] च नीलं कलधौतकांस्यं मुद्गाज्यगारु-
त्मतसर्वपुष्पम् ॥ दासी च दन्तो द्विरदश्च
नूनं वदन्ति दानं विधुनंदनाय ॥ २२ ॥

१ नील वस्त्र ।
२ सुवर्ण या चांदी ।
३ कांस्य ।
४ मूंग ।
५ गौ ।
६ फूल ।
७ दासी ।
८ हस्ती ।

ई. बाणाकार. अं. ४ मगधदेश आत्रेय-
सगोत्र हरितवर्ण कन्यामिथुनकास्वामी.
जप. ४०००

अर्थ–बुधकी प्रसन्नताके अर्थ नील वस्त्र, सुवर्ण, कां-स्यपात्र, मूँग, घृत, गारुत्मत नामक मणि, सर्व पुष्प, दासी और हाथीदाँत या हाथी यह दान कहा गया है२२

---

१ वृषं च नीलम्–इति पा०

गुरुका दान ।

शर्करा च रजनी तुरंगमः पीतधान्यमपि पीतमंबरम् ॥ पुष्परागलवणं सकांचनं प्रीतये सुरगुरोः प्रदीयताम् ॥ २३ ॥

	गुरु ॥ ५ ॥
१ शर्करा । २ हल्दी । ३ अश्व । ४ पीत धान्य । ५ पीत वस्त्र । ६ पुष्पराग। (पुखराज) ७ लवण । ८ कांचन ।	उ. दीर्घचतुरस्रमंडलअंगुल६. सिंधुदेशोद्भव. अंगिरसगोत्र. पी. व. धनमीनकास्वामी. जप. १९०००

अर्थ–बृहस्पतिके तुष्टयर्थ शक्कर, हलदी, अश्व, पीला धान्य, पीला वस्त्र, पुष्पराग (पुखराज) लवण (नोन–साम्हर) तथा सुवर्ण यह दान करना-चाहिये ॥ २३ ॥

भृगुका दान ।

चित्रांबरं शुभ्रतुरङ्गमं च धेनुं¹ सवत्सा रजतं सुवर्णम् ॥ सुतंदुलंचोत्तमगंधयुक्तं वदंति दानं भृगुनंदनाय ॥ २४ ॥

१ चित्रांबर ।
२ श्वेत अश्व ।
३ सवत्सा गौ ।
४ चांदी ।
५ सुवर्ण ।
६ चावल ।
७ सुगंधी पदार्थ ।

पूर्वेपंचकोणमंडल अं.९वृष तुलाकास्वामी. भोजकट देश भार्गवसगोत्र श्वेतवर्ण. जप. १६०००

अर्थ–शुक्रकी प्रसन्नताके लिये चित्र वस्त्र, श्वेत अश्व, बछडेके सहित गौ, चांदी, सुवर्ण और सुगन्धियुक्त उत्तम चावल, यह दान कहा है ॥ २४ ॥

---

१ धेनुश्च वज्रम्–इति पा० ।

शनैश्चरका दान ।

माषाश्च तैलं विमलेन्द्रनीलं तिलाः कुलत्था महिषी च लोहम् ॥ सदक्षिणं चेति वदंति नूनं तुष्टयै च दानं रविनन्दनाय ॥ २५ ॥

<table>
<tr><td>१ माष(उडद)।
२ तैल ।
३ इंद्रनील(नीलम)।
४ तिल ।
५ कुलथी ।
६ महिषी-(भैंस)।</td><td>शनि ॥ ७ ॥
शनि</td></tr>
<tr><td>७ लोह ।
८ दक्षिणा।
९ श्यामवस्त्र ।</td><td>प.धनुषाकारमंडलअंगुल २ सौराष्ट्रदेश काश्यपगोत्र मकर कुंभकास्वा. कृष्ण. व. जप. २३०००</td></tr>
</table>

अर्थ–शनैश्चरकी प्रसन्नताके लिये उडद, तेल, इन्द्रनील (नीलम) तिल, कुलथी, भैंस, लोह, दक्षिणा और श्याम वस्त्र यह दान कहाहै ॥ २५ ॥

---

१ कृष्णा च धेनुः–इति पा० ।

राहुका दान ।

गोमेदरत्नं च तुरंगमं च सुनीलचैलानि च कंबलश्च ॥ तिलाश्च तैलं खलु लोहमिश्रं स्वर्भानवे दानमिदं वदंति ॥ २६ ॥

	राहु ॥ ८ ॥
१ गोमेद ।	
२ रत्न ।	
३ अश्व ।	
४ नील वस्त्र ।	
५ कंबल ।	
६ तिल ।	
७ तेल ।	नैर्ऋत्यांशूर्पाकारमंडल अंगुल १२
८ लोह ।	राठिनादेश पैठीनसगोत्र• कृष्णवर्ण
९ अभ्रक ।	जप १८०००

अर्थ–राहुकी प्रसन्नताके अर्थ गोमेद, रत्न, अश्व, नीला वस्त्र, कंबल, तिल, तेल, लोहा और अभ्रक यह दान कहाहै ॥ २६ ॥

केतुका दान ।

वैडूर्यरत्नं सतिलं च तैलं सुकंबलं चासित-पुष्पकं च ॥ वस्त्रं च केतोः परितोषहेतोश्छा-गस्य दानं कथितं मुनींद्रैः ॥ २७ ॥

१ वैडूर्यमणि ।
२ तिल ।
३ तेल ।
४ कंबल ।
५ काले फूल ।
६ काला वस्त्र ।
७ कस्तूरी ।
८ छाग

वाय. ध्वजाकारमंडल केतु अंगुल ६ अवं-तिदेश जैमिनिसगोत्रधूम्रवर्ण जप १७०००

अर्थ—केतुकी प्रसन्नताके लिये वैडूर्यमणि, तिल, तेल, कंबल, काले फूल, काला वस्त्र, कस्तूरी और छाग यह दान कहा है ॥ २७ ॥

इति ग्रहदान समाप्त ।

---

१ चापि मदो मृगस्य–इति पा०

अथ प्रश्नप्रकार ।

नक्षत्रोंकी अन्धादि संज्ञा ।

अन्धाक्षं वसुपुष्यधातृजलभद्वीशार्यमान्त्या-
भिधं मन्दाक्षं रविविश्वमित्रजलपाश्लेषाश्विचा-
न्द्रं भवेत् ॥ मध्याक्षं शिवपित्रजैकचरणत्वा-
ष्ट्रेन्द्रविध्यन्तकं स्वक्षं स्वात्यदितिश्रवोदह-
नभाहिर्बुध्न्यरक्षो भगम् ॥ २८ ॥

अर्थ–धनिष्ठा, पुष्य, रोहिणी, पूर्वाषाढा, विशाखा उत्तराफाल्गुनी, रेवती यह नक्षत्र अन्धसंज्ञक हैं । तथा हस्त, उत्तराषाढा, अनुराधा, शतभिषा, आश्लेषा, अश्विनी, मृगशिर ये मन्दाक्ष हैं और आर्द्रा, मघा, पूर्वाभाद्रपदा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित्, भरणी यह मध्याक्ष संज्ञकहैं, तथा स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, कृत्तिका, उत्तराभाद्रपदा, मूल, पूर्वाफाल्गुनी ये सुलोचन संज्ञक नक्षत्रहैं । और इनके गिननेकी सबसे सुगम रीति यह है कि रोहिणी

नक्षत्र आदि करके क्रमसे अन्ध, मध्य, मन्द, सुलोचन होते हैं जैसे-रोहिणी अन्ध, मृगशिर मध्य, आर्द्रा मन्द, पुनर्वसु सुलोचन, फिर पुष्य अन्ध, आश्लेषा मध्य, मघा मन्द, और पूर्वा० सुलोचन संज्ञक हैं, इसी तरहसे अट्ठाईसों नक्षत्रोंकी आवृत्ति करनेसे ठीक होजाताहै २८

अथ नष्टवस्तु लाभालाभ विचार ।

अन्धके लभते शीघ्रं मंदके च दिनत्रयम् ॥
मध्यके च चतुःषष्टिर्न प्राप्नोति सुलोचने ॥२९॥

अर्थ-अन्ध नक्षत्रमें गई वस्तु शीघ्र मिले , मन्दमें जानेसे ३ दिनमें मिले और मध्यमें जानेसे ६४ दिनमें मिले और सुलोचनमें गई वस्तु नहीं मिलती ॥ २९ ॥

नष्टवस्तु दिशा ज्ञान ।

अन्धके पूर्वके वस्तु मन्दके दक्षिणे तथा ॥
पश्चिमे मध्यनेत्रे च उत्तरे तु सुलोचने ॥ ३० ॥

१स्याद्दूरे श्रवणं मध्ये-इति पा० ।

अर्थ—अन्ध नक्षत्रमें पूर्वदिशा तथा मन्द नक्षत्रमें दक्षिणदिशा एवं मध्यमें पश्चिमदिशा तथा सुलोचनमें उत्तर दिशामें गई वस्तु जानो ॥ ३० ॥

मघादि अर्यमान्तं च समीपे वस्तु दृश्यते ॥
हस्तादि वसुपर्यन्तमन्यहस्ते च दृश्यते ॥ ३१ ॥
शततारादियमान्तं तु स्वगृहे वस्तु दृश्यते ॥
अग्न्यादि सार्पपर्यन्तमदृष्टं दूरगं तथा ॥ ३१ ॥

अर्थ—मघा नक्षत्रसे लेकर उत्तराफाल्गुनी पर्यन्त यदि वस्तु चोरी जाय तो समीपमें जानना, तथा हस्तसे धनिष्ठातक गई वस्तु दूसरेके हाथमें है ऐसा जानना, एवं शतभिषासे लेकर भरणी पर्यन्त गई वस्तु अपने गृहमें है ऐसा जानना, तथा कृत्तिकासे लेकर आश्लेषापर्यन्त गई वस्तु नहीं मिलती और दूरहै ऐसा जानना॥ ३१ ॥ ३२ ॥

मेषे च ब्राह्मणश्चौरो कन्यायां च कुलांगना ॥
पुत्रो वा यदि वा भ्राता तुलायां तस्करो भवेत् ॥ ३३ ॥

अर्थ-मेष लग्नमें ब्राह्मण चोर, कन्यामें कुलाङ्गना (कुलीन स्त्री) तुलामें पुत्र या भाई ॥ ३३ ॥

वृश्चिके म्लेच्छचोरः स्याद्धार्यां ज्ञेया धनेन च ।
मकरे वैश्यचोरः स्यात्कुंभे च मूषकस्तथा ॥
मीने भूमिगतं प्रोक्तं नान्यथा तस्करो भवेत् ३४॥

अर्थ-वृश्चिकमें म्लेच्छ, धनमें स्त्री, मकरमें बनियां, कुम्भमें चूहा चोर समझना चाहिये तैसेही मीनमें गई वस्तु पृथिवीमें गडी जानो ॥ ३४ ॥ ॥ इति ॥

उच्चनीचचक्र ।

र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
१	२	१०	६	४	१२	७	उच्च
७	८	४	१२	१०	६	१	नीच
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	अंश.

स्वगृह और मूलत्रिकोण चक्र ।

र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	गृह
५	४	१।८	३।६	९।१२	२।७	१०।११	क्षेत्र
५	२	१	६	९	७	११	मूलत्रिकोण

मित्रसम शत्रुबोधकचक्र ।

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ग्र.
गु.म.चं.	बु. सू.	बृ.चं.सू.	सू. शु.	सू.चं.मं.	बु. श.	शु. बु.	मित्र
बु.	मं.गु.शु.श	श. शु.	मं.बृ.श.	श.	बृ मं.	बृ.	सम
श.शु.	०	बु.	चं.	बु. शु.	सू.चं.	सू चं.मं.	शत्रु

द्रेष्काणचक्र ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशि
मं.	शु.	बु	चं.	र.	बु	शु.	मं.	बृ.	श.	श.	बृ.	१० अंश
र.	बु.	शु.	मं.	गु.	श.	श.	गु.	मं.	शु.	बु.	चं.	२० अंश
बृ	श.	श.	बृ.	मं.	शु	बु.	चं.	र.	बु.	शु.	मं.	३० अंश

सूतिकागारके लक्षण ।

जो जन्म लग्नको चन्द्रमा नहीं देखै तो उसका पिता उस समय परोक्ष होगा, इसमें भी यह विशेष है कि लग्नको चन्द्रमा न देखे और सूर्य चर राशिमें और ८।९।११।१२ स्थानमें हो तो पिता विदेशमें था जो सूर्य स्थिर राशिमें उन्हीं स्थानोंमेंसे किसीमें

होवै चन्द्रमा लग्नको देखै तो उसी देशमें था परन्तु उस समय परोक्ष था द्विस्वभावमें हो तो मार्ग चलता था कहना । ऐसेही लग्नमें शनि हो तो पिता परोक्ष कहना यदि मङ्गल सप्तम होवे तौ भी परोक्ष और चन्द्रमा बुध शुक्रके राशियोंके वा अंशोंके मध्यमें हो तौ भी पिता परोक्ष कहना ।

चन्द्रमा मङ्गलके द्रेष्काणमें और शुभग्रह २।११ स्थानमें हो तो वह बालक सर्प्प रूप होगा और लग्न पापग्रहकी राशिका हो और चन्द्रमा भौम द्रेष्काणमें हो २।११ स्थानमें पाप हो तो बालक सर्प अथवा सर्पवेष्टित होगा सूर्य्य चतुष्पदराशि १।२ वा धन परार्द्ध मकरके पूर्वार्द्धमें होवै और सभी ग्रह द्विस्वभाव राशियोंमें बलवान् हो तो यमल दो बालक एक जरायुसे वेष्टित होंगे । और लग्नमें मेष वृष सिंह राशिका मंगल वा शनि हो तो बालक एक नालसे वेष्टित होगा लग्नमें जो नवांश है वह

राशिका लग्नपुरुषांगमें जिस अंग पर हो उसी अंगमें वेष्टित कहना ।

लग्न और चन्द्रमाको बृहस्पति न देखे तो वह बालक जार पुत्र होगा अथवा सूर्य चन्द्रमा इकट्ठे हों और बृहस्पति न देखै तो भी वही फलहै अथवा सूर्य चन्द्रमा एक राशिमें शनि वा मंगलसे युक्त हों तौ भी वही फल है । पाप ग्रह शनि वा मंगल क्रूर राशि २।५।८।१०।११ में हों और सूर्यसे ७ वा ८ वा ५ वा भावमें हों तो बालकका पिता बन्धनमें है कहना इसमें भी सूर्य चर राशिमें हो तो परदेशमें बँधा है स्थिर राशिमें स्वदेशमें, द्विस्वभावसे मार्गमें बँधा होगा ।

पूर्ण चन्द्रमा कर्क राशिमें और बुध लग्नमें बृहस्पति चतुर्थ भावमें हो तो वह प्रसव नौका वा पुलके ऊपर हुआहै अथवा लग्नमें जलचर राशि हो और चन्द्रमा सप्तम हो तौ भी वही फल होगा । ऐसेही यदि

लग्नमें जलचर राशि हो चन्द्रमा भी जलचर राशिका हो तो प्रसव जलके ऊपर हुआ कहना । अथवा पूर्णचन्द्रमा लग्नको पूर्ण देखे तो यही फल होगा अथवा जलचर राशिका चन्द्रमा दशम वा चतुर्थ वा लग्नमें हो तो भी वही फल कहना । अथवा शनि लग्न वा चन्द्रमासे बारहवां हो और उसको पापग्रह देखै तो कारागारमें जन्म हुआ होगा और शनि कर्क वा वृश्चिक राशिका लग्नमें हो चन्द्रमा भी देखै तो खाई खातमें जन्म कहना । तथा शनि जलचर राशिका लग्नमें हो और उसको बुध देखे तो नृत्यशालामें जन्म कहना, उसी शनिको सूर्य देखे तो देवालयमें और उसीको चन्द्रमा देखे तो ऊषर भूमिमें जन्म कहना । और मनुष्य-राशि लग्नमें हो शनि भी लग्नका हो और मङ्गलकी दृष्टि शनिपर हो तो प्रसव श्मशानमें हुआ

होगा । और नृराशि लग्नगत शनिको शुक्र चन्द्रमा देखे तो सुन्दर रमणीय घरमें जन्म हुवा। और ऐसे ही शनिको बृहस्पति देखे तो अग्निहोत्र वा हवनशाला वा रसोईके स्थानमें जहां नित्य अग्नि रहती है वहां जन्म कहना और ऐसे ही शनिको सूर्य देखे तो राजघर वा देवालय वा गोशालामें जन्म होगा और उसी शनिको बुध देखे तो शिल्पालयमें जन्म कहना ।

लग्न राशि नवांशक जैसा हो वैसीही भूमिमें जन्म, चरराशि नवांशकमें मार्गमें, स्थिरसे घरमें जन्म, जो लग्न वर्गोत्तम हो तो अपने घरमें जन्म कहना, लग्न नवांशकमेंसे बलवान्का फल होता है, पूर्व योगोंके अभावमें यह योग देखना ।

मङ्गल सूर्य एक राशिके हों और इनसे नवम वा पञ्चम वा सप्तम भावमें चन्द्रमा हो तो वह बालक

मातासे अलग हो जाता है और ऐसे योगमें चन्द्रमा पर बृहस्पतिकी दृष्टि भी हो तो बालक माताका त्यागा हुवा भी दीर्घायु व सुखी होगा । तथा लग्नमें चन्द्रमा हो पापग्रह उसे देखैं और सप्तम मंगल हो तो माताका त्यागा हुवा वह बालक मरजायगा और लग्नमें चन्द्रमा हो और शुभग्रह भी देखें शनि मङ्गल ग्यारहवें स्थानमें हों तो मातृत्यक्त बालक जिस वर्णके शुभग्रहकी दृष्टि चन्द्रमापर है उसी वर्ण ब्राह्मणादिके हाथ लगैगा और बचेगा, जो चन्द्रमापर शुभग्रहकी दृष्टि और पापग्रहकी भी दृष्टि हो और पूर्वोक्त योग भी पूरा हो तो बालक किसीके हाथ लग कर मर जायगा ।

पितृसंज्ञक ग्रह सूर्य शनि बलवान् हों तो पिता वा ताऊ (चचा) के घरमें जन्म कहना, जो मातृसंज्ञक ग्रह चंद्रमा शुक्र बलवान् हों तो माँ वा माताकी बहिनोंके घरमें जन्म कहना, जो शुभग्रह नीचराशियोंमें

हों तो वृक्षमें वा वृक्षके नीचे वा काष्ठके घरमें जन्म वा पर्वत नदी आदिमें कहना, जो शुभग्रह नीचमें और लग्न चन्द्रमाको तीनसे ऊपर ग्रह न देखें तो जङ्गलमें वा जहां कोई मनुष्य न हो ऐसे स्थानमें जन्म, जो लग्न चन्द्रमाको बहुत ग्रह देखें तो बस्तीमें बहुत मनुष्योंके समुदायमें जन्म कहना।

चन्द्रमा शनिके राशि वा अंशकमें हो तो सूतिकाके घरमें दीवा नहीं था अन्धेरेमें जन्म हुवा और जो चौथा चन्द्रमा हो तो भी वही फल, जो चन्द्रमाको शनि पूर्ण देखै तोभी वही और चन्द्रमा जलचर राशिके अंशमें हो अथवा चन्द्रमा शनिके साथ हो तोभी अन्धेरेमें जन्म हुवा, सूर्य युक्त चन्द्रमाका यही फल है, इन योगोंके होनेमें सूर्य बलवान् हो मङ्गल देखे तो सब योगोंका फल कट जाता है, दीप सहित घरमें जन्म कहना,

जो तीनसे उपरान्त ग्रह नीच राशिमें हों अथवा लग्नमें वा चतुर्थमें नीच (८) का चन्द्रमा हो तो भूमिमें जन्म कहना । और शीर्षोदय राशि लग्नमें हो तो बालकका मुख प्रसव समयमें आकाशकी ओर उत्तान था, पृष्ठोदयमें अधोमुख पृथ्वीकी ओर करके पैदा हुवा, मीन लग्न दोनों प्रकारका है इसमें जन्में तो तिर्छा एक हाथ ऊपर एक हाथ नीचे पृथ्वीकी ओर कहना और लग्न वा लग्ननवांश वा लग्नस्थ ग्रह वक्र हो तो उलटा प्रसव-पहिले पैर पीछे शिर होगा, पापयुक्त चंद्रमा सप्तम वा चतुर्थ स्थानमें हो तो प्रसव समयमें माताको बडा कष्ट हुवा होगा, प्रसव कहीं खाट (चारपाई) में कहीं दो मंजले तीन मंजले घरमें कहीं भूमिमें होते है, और दिनमें विना दीपक भी अन्धेरा नहीं रहता इत्यादि विचार जाति कुल देशकी रीति बुद्धि विचारसे सब जगह फल कहना ।

चंद्रमासे तेल, जैसे राशिके प्रारम्भमें जन्म होगा तो दीपकमें तेल भरा था, मध्य राशिमें हो तो आधा था, अन्त्य राशिमें हो तो तेल नहीं रहाथा कहना, ऐसे लग्न प्रारम्भमें हो तो बत्ती दीपकपर पूर्ण थी, मध्य लग्नमें आधी दग्ध, अंत्य लग्नमें बत्ती थोडी रही थी, सूर्य चर राशिमें हो तो दीवा एक जगहसे दूसरे जगे धरा गया; स्थिरमें स्थिर, द्विस्वभावमें चालित कहना, सूर्यकी राशि जिस दिशाकी है उस दिशामें दीवा होगा वा सूर्य ८ प्रहर आठ दिशाओंमें घूमताहै उस समय जहां हो उधरही दीवा कहना इन योगोंमें पाप युक्तमें तैलादि मलिन, शुभ युक्तसे निर्मल और राशियोंके रंग समान रंग कहना । केंद्रमें जो ग्रह हो उसकी जो दिशा है उस ओरको सूतिकाके घरका द्वार होगा, बहुत ग्रह केन्द्रमें हों तो बलवान्‌की दिशा और

केन्द्रोंमें कोई भी न हो तो लग्न राशिकी दिशा अथवा लग्न द्वादशांशकी दिशामें द्वार कहना, मुख्य बलवान् ग्रह फल देताहै ॥

शनि बलवान् हो तो सूतिकाका घर पुराना और अच्छा होगा, मङ्गल बलवान् हो तो अग्निदग्ध, चन्द्रमासे नवीन और शुक्ल पक्ष हो तो सुन्दर लीपा पोता भी होगा, सूर्यसे कच्चा और काष्ठसे भरा हुआ, बुधसे अनेक प्रकार चित्र विचित्र, शुक्रसे सुन्दर रमणीय रङ्गदार, बृहस्पतिसे दृढ पक्का, बलवान् ग्रह जिससे घरका लक्षण पाया है उसके समीप वा आगे पीछे जितने ग्रह हों उतनी कोठरियां उस घरमें आगे पीछे होंगी, आचार्यने यहां शालाप्रमाण नहीं कहा अत एव मैं और ग्रंथोंसे लिख देता हूं कि, बृहस्पति दशम स्थानमें कर्कके ५ अंशके भीतर आरोही हो तो तिपुरा घर होगा, ५ अंशसे उपरान्त अवरोही हो

तो दोपुरा, परमोच्च ५ अंश पर हो तो चौपुरा और लग्नमें धन राशि बलवान् हो तो त्रिपुरा और जो द्विस्वभाव ३ । ६ । १२ राशि हैं इनमें दोपुरा कहना ।

लग्नमें १ । ४ । ७ । ८ । ११ ये राशिया वा इनके अंश हों तो उस घरमें वास्तुसे पूर्व जन्म और ९ । १२ । ३ । ६ ये राशियां वा इनके अंश हों तो उत्तरको, २ से पश्चिम ओर ४ । १० से दक्षिणकी ओर प्रसव हुआ कहना ।

सूतिका स्थान घरके किस ओर था कहनेमें १ । २ राशि लग्नमें हो तो घरके पूर्व और ३ से आग्नेय, ४ । ५ दक्षिण, ६ नैर्ऋत्य, ७ । ८ पश्चिम, ९ वायव्य, १० । ११ उत्तर, १२ ईशान जैसा पहिले वास्तु कहा वैसाही यहां जानना, लग्न द्वितीय राशिके स्थानमें खाटका शिर, तीसरी बारहवींके स्थानमें शिरानेके २ पावे इनमें तीसरेसे दाहिना, बारहवेंसे बायां और

छठी और नववीं राशिके सदृश पायानतरके पावे, इनमें भी छठेसे दाहिना नववींसे बायां और राशियोंसे और अंग, ये खाटके लक्षण इस कारणसे हैं कि, जहां द्विस्वभाव राशि हों वहां चिन त्वचा कच्ची लकडी अथवा कील होगी, जिस राशिमें पाप ग्रह हों उस अंगमें भी यही फल कहना।

लग्नसे उपरान्त चन्द्रमा पर्यन्त बीचमें जितने ग्रह हों उतनी वहां उपसूतिका सूतिकाघरमें और स्त्री होंगी, उनके रूप वर्ण आयु उनहीं ग्रहोंके सदृश कहना और लग्नसे सातवें स्थान पर्य्यन्त जितने ग्रह हों उतनीं स्त्रियां समीप [भीतरही] होंगी, सप्तमसे द्वादशपर्यन्त जितने हों उतनी घरसे बाहर होंगी इनमें कोई ग्रह अपने उच्च वा वक्रका हो तो तिगुनी स्त्री कहनी, और कोई ग्रह उच्चांश स्वांश स्वीय द्रेष्काणमें हो तो द्विगुनी स्त्री

कहनी, यहां अन्य आचार्य दृश्यादृश्यमें उलटा मानते हैं यथा—लग्नसे सप्तमपर्यंत जितने ग्रह हों उतनी बाहर और सप्तमसे द्वादशपर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी भीतर ॥

लग्नमें जो नवांश है उसके स्वामीके तुल्य रूप बालकका होगा, अथवा सबसे बहुत बल जिस ग्रहका है उसका स्वरूप होगा, राशि बल विशेष हो तो लग्न नवांशके तुल्य और ग्रह बल विशेष हो तो ग्रहके तुल्य, और चन्द्रमा जिस नवांश पर है उसके स्वामीके तुल्य वर्ण, कोई ग्रह दीर्घ राशिका स्वामी हो और दीर्घ राशिमें बैठा हो तो उस राशिके तुल्य अङ्ग दीर्घ होगा, वैसे ही ह्रस्वमें ह्रस्व, मध्यमें मध्य कहना ।

लग्न द्रेष्काण वशसे ३ भागोंमें चिह्नादि होते हैं पहिला द्रेष्काण हो तो लग्न राशि शिर, दूसरी बारहवीं नेत्र, ३ । ११ कान, ४ । १० नाक, ५ । ९ गाल

६।८ हनु (ठोडी) ७ मुख, इनमें लग्नसे सप्तम पर्यन्तकी दाहिनी ओरके अङ्ग और सप्तमसे द्वादश पर्यन्त वाम अङ्ग, सर्वत्र यह विचार करना. दूसरा द्रेष्काण हो तो कण्ठ लग्न राशि १ और २।१२ कन्धा, ३।११ बाहु, ४।१० बगल, ५।९ हृदय, ६।८ पेट, ७ नाभि, वाम दक्षिण विभाग पूर्ववत्। तीसरा द्रेष्काण हो तो लिङ्ग और नाभिके मध्य, २।१२ लिंग और गुदा, ३।११ वृषण, ४।१० ऊरू, ५।८ जानु, ६।८ घुटने, ७ पैर इसी प्रकार द्रेष्काणोंके विभागहैं।

जिस राशि द्रेष्काणमें पाप ग्रह है वह राशि तुल्य अङ्गमें चोट वा छिद्र करती है, उस पापग्रहके साथ शुभ ग्रह भी हो वा शुभग्रह देखे तो तिल, लाखन, मसा आदि होवें, जो वही ग्रह अपनी राशि वा अंशमें हो वा स्थिर राशि नवांशमें हो तो उस अङ्गमें तिलादि चिह्न

जन्महीसे होगा, इससे विपरीत हो तो वह चिह्न पीछे होगा, यदि वह चिह्नकर्ता ग्रह शनि हो तो पत्थरसे वा वात व्याधिसे चिह्न होगा, मङ्गल हो तो अग्नि वा शस्त्र वा विषसे, बुधसे पृथ्वीपर गिर जानेसे, सूर्यसे काष्ठ वा चतुष्पदसे, चन्द्रमासे सींगवाले वा जलचर जीवसे और ग्रह शुभ होते हैं व्रणकारक नहीं हैं। बुध संयुक्त तीन ग्रह और शुभ या पाप जैसे हों बुध संयुक्त ४ होनेसे वाम दक्षिण जिस विभागमें बैठें उस अंग पर अवश्य चिह्न करैं, उनमें भी जो ग्रह अधिक बली है उसकी दशामें वह व्रण चोटका होगा, और कोई पाप ग्रह छठा हो तो जिस अंगमें है उसपर व्रण करैगा वह पाप ग्रह अपनी राशि अंशमें वा शुभ युक्त हो तो वह व्रण गर्भ हीसे होगा औरप्रकारसे पीछे होनेवाला कहना ॥

॥ इति सूतिकाविचार समाप्त ॥

काशीपुर्य्याः पञ्चगव्यूतिमाने
वारीशाशामध्यगे विज्ञपूर्णे ।
ग्रामे तेळारीति नाम्ना प्रसिद्धे
शालग्रामो लब्धजन्मा विधिज्ञः ॥ १ ॥
अधीत्य शास्त्रं परमादरेण
पितुः प्रसादाद्रघुनन्दनस्य ।
कृता मया बालसुखाय टीका
नृणां गिरेय ग्रहमोचरस्य ॥ २ ॥
अङ्गाङ्गाङ्कविधौ हीयं वैक्रमे वत्सरे शुभे ॥
कृष्णे कार्ष्णितिथौ पौषे कृतिः पूर्त्तिमगाच्छुभा ॥ ३ ॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS